कविता की नई जमीन

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपए

वागर्थ

वर्ष 32 अंक 370 सितंबर–2026

कहानियाँ

शिव कुमार यादव
शर्मिला जालान
अनुकृति उपाध्याय
जिंदर (पंजाबी)
निबाल थवाबतेह (फिलिस्तीनी)

भारतेंदु हरिश्चंद्र : हिंदी किधर जा रही है

सुधीश पचौरी
ए. अरविंदाक्षन
रविभूषण
प्रियदर्शन
अवधेश प्रसाद सिंह
प्रभाकर सिंह
प्रस्तुति : सुषमा कुमारी

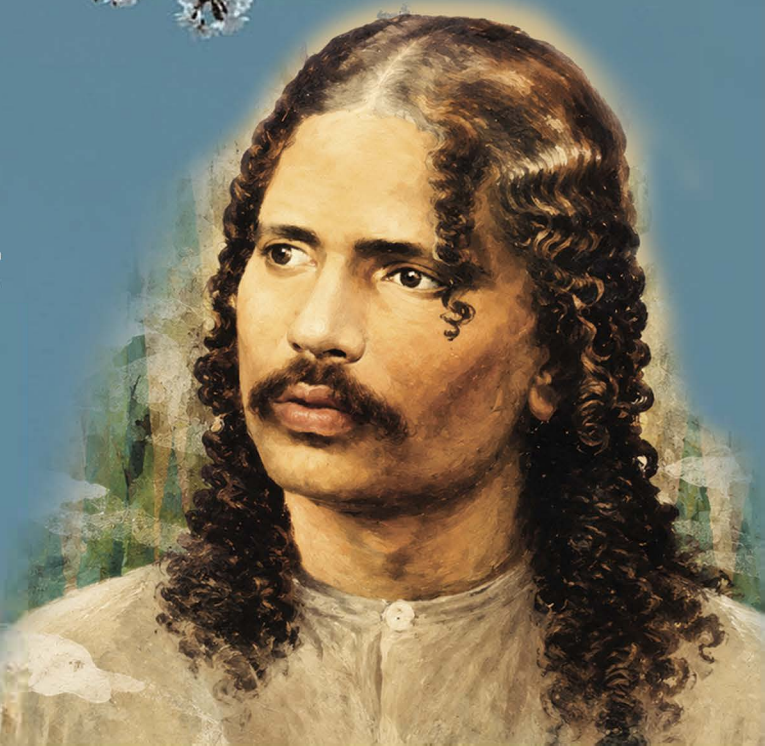

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 370, सितंबर 2026

संपादक

शंभुनाथ

प्रबंध संपादक

प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक

डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग

अंक सज्जा

सुशील कान्ति

संपादकीय विभाग

36 ए, शेक्सपियर सरणी

कोलकाता–700017

vagarth.hindi@gmail.com

7449503734

(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण

तारक नाथ राय

इस अंक में

ज्ञान का भविष्य : **संपादकीय** 5

कहानियां

उड़नबाजों का बाजार : **शिव कुमार यादव** 12

नीचे नगर का आदमी : **शर्मिला जालान** 22

शहर और लड़की : **अनुकृति उपाध्याय** 30

मेरा कोई कुसूर नहीं (पंजाबी कहानी) : **जिंदर**

(अनुवाद : **जसविंदर कौर बिंद्रा**) 36

कविताएं

राकेश रंजन/श्रीप्रकाश शुक्ल/अनामिका यादव/रुचि भल्ला

मयंक मिश्र/प्रीति पांडेय/सुचिता विश्वकर्मा/सत्य प्रकाश ध्रुव

धनंजय गुडाकेश/राकेश जोशी/राजकुमार प्रजापत

पारुल तोमर 48

संस्कृत कविताएं : **हर्षदेव माधव**

(अनुवाद : **अरुण कुमार निषाद**) 62

परिचर्चा

भारतेंदु हरिश्चंद्र : हिंदी किधर जा रही है : **सुधीश पचौरी/**

ए अरविंदाक्षन/रविभूषण/प्रियदर्शन/अवधेश प्रसाद सिंह/

मृत्युंजय श्रीवास्तव/प्रभाकर सिंह

(प्रस्तुति : **सुषमा कुमारी**) 64

स्मरण

गोपाल प्रसाद की कविताएं

(प्रस्तुति : **निशांत**) 95

विश्वदृष्टि

सपने से दुखांत तक (फिलिस्तीनी कहानी) : **निबाल थवाबतेह**

(अनुवाद : **बाल मुकुंद नंदवाना**) 98

समीक्षा संवाद

कविता की नई जमीन : **आनंद गुप्ता**

(केतन यादव, अंचित, ज्योति शोभा और यशवंत सिंह की पुस्तकें) 102

सोशल मीडिया 110

विविध

पाठक संसद/किताबें/सांस्कृतिक गतिविधियां 117

लघुकथा

खिड़की : **पवन शर्मा** 21/स्मृति का पेड़ : **पवन शर्मा** 35

नई सोच : **शेफालिका सिन्हा** 29

बतरस

ऐ घड़ी ठहरना जरा : **कुसुम खेमानी** 118

देश-देशांतर

केदारनाथ सिंह/विक्टोरिया अमेलीन (यूक्रेनी)

कविताओं में रेखांकन : **संदीप राशिनकर**

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-

सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 550 रुपये

वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 550+1008 = 1558 रुपये

आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर

भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।

भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**

जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक

समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**

वितरण तथा अन्य कार्य **: बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

ज्ञान का भविष्य

क्या ज्ञान का अब कोई भविष्य है? आज यह दुनिया का सबसे बड़ा सवाल है। यदि ज्ञान का भविष्य संकट में हो, यह समूची सभ्यता के भविष्य पर असर डाल सकता है। इन दिनों ज्ञान परंपरा पर कुछ इस तरह चर्चा होती है, मानो ज्ञान के समुंदर में पहली बार पानी आया है! दूसरी तरफ, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आने से माना जा रहा है कि ज्ञान का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है, अर्थात कुछ सेकेंड में बादलों के बिना भी ज्ञान की भारी बरसात हो सकती है! देखा जा सकता है कि उपर्युक्त दोनों मिलकर किस तरह 'अज्ञानता के उपनिवेश' का निर्माण कर रहे हैं।

कभी कबीर ने कहा था, 'संतों आई ज्ञान की आंधी रे/ भ्रम की टाटी सबै उड़ानी माया रहै न बांधी रे।' भारतीय परंपराओं में ज्ञान सदियों से अपनी ऐतिहासिक सीमा में भ्रमों को चुनौती देने, विवेकपूर्ण संग्रह-त्याग, तर्क-वितर्क, आत्मपरिष्कार और मनुष्य के बौद्धिक विकास का मामला रहा है। सवाल है, क्या ज्ञान आज ऐसी कोई भूमिका निभा रहा है?

इतिहास में लंबे काल तक हथियारों के बल पर परिवर्तन आए। नवजागरण तथा ज्ञानोदय के काल में लोग सोचने लगे कि ज्ञान से भी, सिद्धांतों का प्रचार करके परिवर्तन आ सकता है। एक समय ज्ञान के प्रसार से सामाजिक परिवर्तन आए भी थे। क्या आज ज्ञान में परिवर्तन लाने की क्षमता बची है?

हम जानते हैं कि लिटरेरी फेस्टिवल में केवल जीवित लेखक होते हैं, जबकि पुस्तकालय ऐसी जगह है जहां दुनिया भर के सैकड़ों-हजारों साल पुराने कवियों और लेखकों की भी सांसें चलती हैं। पुस्तकालय में सरहदें नहीं होतीं। यहां गूंगी कर दी गईं स्मृतियां होती हैं। यहां आकर हम एक लंबे इतिहास ही नहीं एक सुंदर भविष्य के दरवाजे पर भी कभी खड़े होते थे। पुस्तकालय ज्ञान का संसद भवन रहा है जहां चेहरे अदृश्य हों, आवाजें अदृश्य हों पर वे दिखाई-सुनाई पड़ सकती थीं यदि हमारी आंखें खुली हों